भूमिका

"गिरिडीह जिला में विकास पत्रकारिता (पर्यावरण चेतना के विशेष संदर्भ में)" जैसे विषय का चुनाव इसलिए क्योंकि मूलतः गिरिडीह का निवासी हूँ। इस विषय के चुनाव के पीछे का एक कारण यह भी है कि जहाँ वैश्विक स्तर पर पर्यावरण को लेकर लगातार बहस-मुबाहिसा जारी है, वहीं इस अध्ययन के माध्यम से यह देखना दिलचस्प होगा कि झारखंड जो अपने नाम के अनुरूप जंगलों का राज्य रहा है, क्या अब भी स्थिति वही है या कि स्थितियाँ बदली हैं? क्या झारखंड को अब भी जंगलों का राज्य कहना उचित होगा या देश के बाकी हिस्सों की तरह वहाँ भी धड़ल्ले से जंगलों की कटाई जारी है? अगर हाँ तो स्थितियों के बदलने के पीछे का कारण क्या है? सरकार, वहाँ के निवासी या निजी संस्थाएँ पर्यावरण को बचाने के लिए कोई कदम उठा रही या नहीं। और इन सबमें पत्रकारिता खासकर विकास पत्रकारिता की भूमिका सकारात्मक रही है या नकारात्मक।

इस विषय को पत्रकारिता की नजर से देखने के पीछे का कारण स्पष्ट तौर पर पत्रकारिता और विकास पत्रकारिता के बीच का द्वंद्व रहा है, कि विकास पत्रकारिता को तथाकथित मुख्यधारा की पत्रकारिता से अलग होकर कैसे देखा जाए। लगातार इस द्वंद्व में रहा हूँ कि, क्या वाकई पत्रकारिता (वर्तमान में मीडिया) लोकतंत्र का चौथा खंभा है? खासकर तब जब भूमंडलीकरण के बाद मीडिया में हुए बदलाव जगजाहिर हैं। खासकर तब जब आजादी के समय की पत्रकारिता आज के पत्रकारिता में जमीन-आसमान का अंतर है। खासकर तब जब भारत सरकार का वाणिज्य मंत्रालय और खुद मीडिया के मालिक भी इसे एक उद्योग मानते हैं। साथ ही, एक तर्क यह भी है कि, उसके पास बाकी तीन अन्य स्तंभों – विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका – की तरह कोई कानूनी अधिकार नहीं है। पूरे अध्ययन में विकास पत्रकारिता को इसलिए रखा गया है क्योंकि वे अधिरचना के तमाम

स्तरों से जुड़े होने की बात करता है और यह सच भी है। अध्ययन में इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव को देखने की कोशिश की गई है।

प्रथम अध्याय में प्रस्तावना, साहित्य पुनरावलोकन, शोध-समस्या, शोध की प्रासंगिकता (उद्देश्य एवं महत्त्व), उपकल्पना और शोध-प्रविधि को रखा गया है।

द्वितीय अध्याय में झारखंड और गिरिडीह का एतिहासिक एवं भौगोलिक अवलोकन किया गया है। साथ ही यह भी देखने की कोशिश की गई है कि झारखंड और गिरिडीह में पर्यावरण चेतना के प्रति वहाँ के समाज की क्या भूमिका है?

तृतीय अध्याय में पर्यावरण के तमाम पहलूओं पर चर्चा करते हुए उसे भारतीय संस्कृति से जोड़ कर देखने की कोशिश भी की गई है। इस अध्याय में भारत में हुए पर्यावरणीय आंदोलन की भी चर्चा की गई है।

चतुर्थ अध्याय में विकास पत्रकारिता के उदय एवं विकास पर अध्ययन किया गया है। साथ ही विकास पत्रकारिता के स्त्रोत एवं उसकी सीमा को भी रेखांकित करने की कोशिश की गई है।

पंचम अध्याय में सितंबर, 2016 में प्रकाशित पूरे माह के दैनिक जागरण अख़बार का अध्ययन किया गया है और यह देखने की कोशिश की गई है कि पूरे माह में पर्यावरण चेतना से संबंधित कितनी खबरों को प्रमुखता से छापा गया है, और अगर छापा गया है तो उन्हें कहाँ और कितना जगह दिया गया है।

षष्ठम अध्याय में शोध कार्य के दौरान भराए गए प्रश्नावली का अवलोकन किया गया है। प्रश्नावली से प्राप्त तथ्यों को तालिका की मदद से विश्लेषित भी किया गया है।